अमृत प्रार्थना
भगवान से

हे प्रभु! हे जगतपते! हे सर्व सामर्थशाली! आप जीव की दशा को जानते हैं। वह पाप और पुण्य के प्रारब्ध से रुका हुआ है। जन्म जन्मांतर से अटका हुआ है। उसी प्रारब्ध ने उसे जबरदस्ती पुण्य कर्म में अर्थात पाप कर्म में लगा रखा है। प्रारब्ध इतना बलवान है कि उसे गलत तरफ ले जाता है और वह जीव विवश हो जाता है। लेकिन जब आप की शरण में आ जाता है, आपकी सामर्थ हो जाती है, आपका बल उसका बल हो जाता है। हे प्रभु! मैं भी अपने प्रारब्ध से पीड़ित होकर अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के फल से पीड़ित होकर आपकी शरण में आया हूँ। आप सर्व सामर्थशाली हैं। गणिका, अजामिल,व्याध आदि ना जाने कितने आपकी शरण में आए और आपने उन सब का उद्धार किया है। मैं भी आपकी शरण में आया हूँ! इसलिए मेरी शरणागति को स्वीकार करें! इस प्रारब्ध के, पूर्व जन्मों के कर्मों से मेरी रक्षा करें! रक्षा करें! रक्षा करें!

ॐ शांति! शांति! शांति!